रिकॉर्ड:- जो पिया के साथ है..... ओम शान्ति। प्रातः क्लास 2-7-67

डबल ओम शान्ति:- एक बाप स्वधर्म शान्तः धर्म मे टिका हुआ है। बच्चों को भी कहते है कि अपने स्वधर्म मे टिको और बाप को याद करो। और कोई ऐसे कह नही सके कि बाप को याद करो, स्वधर्म मे टिको। तुम बच्चो की बुधी मे निश्चय है। निश्चय बुधी विजयन्ति वो ही विजय पहनेंगे। काहे पर विजय पावेंगे। बाप के वर्से पर। स्वर्ग मे जाना यह है बाप के वर्से पर विजय पाना। बाकी है पद के लिये पुरुषार्थ। स्वर्ग मे जाना तो जरूर है। बच्चे जानते है कि यह छी-2 दुनियां है। बहुत अथाह दुःख आने वाले है। ड्रामा के चक्र को भी तुम बच्चे जानते हो कि अनेक बार बाबा आया है सभी आत्माओं को पावन बना कर मच्छरों की तरह ले जाने। फिर खुद भी निर्वाण धाममे जाकर विश्राम करेंगे। बच्चे भी जावेंगे। तुम बच्चो को यह तो खुशी रहनी चाहिये कि हम अपने सुख धाम मे जावेंगे वाया शान्तिः धाम। यह है तुम्हारी ऐम आब्जेक्ट रोज-2 सुनते हो समझते हो हमको पतित पावन बाप पढाते है। पावन बनने का बहुत सहज उपाय बताते है याद का। यह भी नई बात नही है। लिखा हुआ भी है कि भगवान ने राजयोग सिखाया। सिर्फ भूल यह कर दी है कि कृष्ण का नाम डाल दिया है। ऐसे भी नही कि बच्चो को जो नालेज मिल रही है वो गीता के इलावा अन्य किसी शास्त्र मे होगी। गपोडे तो बहुत मारते है कि पहले वेदमे है कि शिव परमात्मा ने ब्रहमा दवारा यज्ञ रचा था। उसकी समापति आबु मे हुई थी। आज-2 यह भी सब गपोडे है। अगर ऐसा होता तो सुनाने वाले खुद तो भागे ही आते। बाते तो बहुत लोग बनाते भी है नां। बच्चे जानते है कि कोई भी मनुष्य की महिमा है नही जैसे कि बाप की है। बाप नही आवे तो सृष्टी का चक्र ही नही फिरे। दुःख धाम से सुख= सुखधाम कैसे बनें। सृष्टी का चक्र तो फिरना ही है। बाप को भी जरूर आना है। बाप आते ही है सबको ले जाने। फिर चक्र फिरता है। बाप नही आवे तो कलयुग से सतयुग कैसे बनें। बाकी यह बाते किसी शास्त्र मे नही है। सर्वशास्त्रमई शिरोमणी मे ही नही है तो उसके नीचे की पुस्तको मे हो कैसे सकता है। ऐसे-2 बाते कोई सुनाते भी है तो उसमे खुश नही होना चाहिये। किसीको बताना भी नही चाहिये कि ऐसे-2 वेद मे है। कहेंगे कि इसने तो यह अपना बनाया है यह राजयोग तो है ही गीता मे। बाकी ऐसी बातो मे कुछ रखा नही है। अगर समझते कि भगवान आबुमे आया हुआ है तो एकदम भागते मिलने लिये। सन्यासी भी चाहते तो यही है नां कि भगवान से मिले। पतित पावन को याद करते है वापस जाने लिये। अब तुम बच्चे पदम भाग्यशाली बन रहे हो। वहां पर अथाह सुख होते है। नई दुनियां मे जो देवी देवता धर्म था वो अब है नही। बाप तो दैवी स्वराज्य की स्थापना करते ही है ब्रहमा दवारा। यह तो क्लीयर है। तुम्हारी ऐम आब्जेक्ट ही यह है। इसमे तो शुभय की बात ही नही। आगे चल कर समझ ही जावेंगे। राजधानी तो जरूर स्थापन होनी है। आदी सनातन तो है ही देवी देवता धर्म। इन ल-न को कोई हिन्दु नही कहा जाता है। हिन्दु कोई धर्म नही है। हिन्दुस्तान के रहने वाले को हिन्दु कहना यह भी तो मूर्खता है। जबस्वर्ग मे रहते हो तो इनका नाम ही भारत रहता है। फिर जब तुम नर्क मे आते हो तब हिन्दुस्तान नाम पड़ता है। हिन्दुस्तान नाम है ही नर्कवासियों का। यहां तो कितन दुःख ही दुःख है। फिर यह धरती बदलती है स्वर्ग मे तो है ही सुखधाम। यह नालेज तुम्ही बच्चो को है। दुनियां के मनुष्य कुछ भी नही जानते है। बाप खुद कहते है कि अभी है अन्धेरी रात। रातमे ही मनुष्य धक्के खाते रहते है। तुम बच्चे तो रोशनी मे हो। यह भी साक्षी होकर बुधी मे धारन करना है सेकिंड बा सेकिंड सृष्टी का चक्र फिरता रहता है। एक दिन नही मिले दूसरे से। सारी दुनियां की ऐक्ट बदलती रहती है। नई-2 सीन चलती रहती है। इस समय टोटलि है ही दुःख की सीन। अगर सुख है तो भी काग विष्टा समान। बाकी दुःख ही दुख है। इस जन्म मे करके सुख होगा फिर दूसरे जन्म मे दुःख। अब तुम बच्चो की बुधी मे यह रहना है कि अब हम जाते है अपने घर। इसमे मेहनत करनी है पावन बनने की। श्री-2 ने श्रीमत दी है ल-न बनने की। बैरिस्टर मत देंगे कि बैरिस्टर बनो। अब बाप भी कहते है

कहते है श्रीमत सैयर बनो। अपने से पूछना चाहिये कि मेरे मे कोई अवगुण तो नही है। इस समय गाते भी है मुझ निर्गुण हारे मे कोई गुण नही है आप ही तरस पडोई। तरस अर्थात रहम। बाप रहम क्या करे वो कोई को पता नही है। बाप कहते है मै तो रहम करता नही हूं। रहम तो हर एक अपने पर करता है। यह ड्रामा बना हुआ है। बेरहम रावण तुमको दुःख मे ले जाते है। यह भी ड्रामा मैं नूंध है। रावण का भी कोई दोष नही है। बाप आकर सिर्फ राय देते है। बाकी यह रावण राज्य तो फिर भी चलेगा। ड्रामा बनादी है। नाँ तो रावण का दोष है नाँ है मनुष्यों का दोष है। कोपिदना ही है। रावण से छुडाने लिये ही बाप युक्तियाँ देतेरहते है। रावण मत पर तुम कितने पापात्मा बने हो। अब पुरानी दुनियाँ है फिर जरूर नई दुनियाँ आवेगी। चक्र तो फिरेगा ही नाँ। अब सतयुग को ही जरूर आना है। अब तो है संगम युग। महाभारत लडाई भी इसी समय की है। विनाश काले विप्रीत बुधी भी होने का है और हम विजयन्ति हम स्वर्ग के मालिक होंगे बाकी कोई भी होंगे ही नही। यह भी समझते हो कि पवित्र होने बिना देवता बनना मुश्किल है। अब बाप से श्रीमत मिलती है श्रेष्ठ देवता बनने। ऐसी मत कब मिल नही सके। श्रीमत देने का उनका पार्ट भी संगम पर है। और कोई मे ज्ञान है नही। भक्ति माना ही भक्ति। उनको ज्ञान नही कहेंगे। रूहानी ज्ञान ज्ञान सागर रूहानी देते है। उनकी ही महिमा भी करते है ज्ञान का सागर सुख का सागर... बाप पुरुषार्थ की युक्तियाँ भी बताते रहते है। ख्याल रखना चाहिये कि अगर अब मै फेल=फेल हुआ तो कल्प कल्पान्तर फेल होता ही रहूंगा। बहुत चोट लग जावेगी। श्रीमत पर नही चलने कारण बहुत चोट लग जाती है। ब्राह्मणों का झाड तो बढना भी जरूर है। इतना ही बढेगा जितना दैवी झाड है। तुमको तो पुरुषार्थ करना और करवाना है। जिन्होने कल्प पहले भी किया है उनको कोई भी तकलीफ नही फील होगी। सैप्लिंग लगता रहेगा। ताकिं पूरे देवताओं का झाँड पूरा हो जावे। तुम जानते हो कि अब हमारा कल्याण हो रहा है। पतित दुनियाँ से पावन दुनियाँ मैं जाने का कल्याण होता है। बुलाते भी हो कि पावन दुनियाँ मैं ले जाओ। तुम बच्चो को अब ताला खुलता है। बाप तो बुधी वानो की भी बुधी है नाँ। अब तुम समझ रेह हो फिर आगे चल कर देखना कि किस-2 का ताला खुलता है। यह भी ड्रामा चलता रहता है। फिर सतयुग से रिपीट होगी। ल-न जब तख्त पर बैठते है तब सम्वत शुरू होता है। तुम लिखते भी हो बन से 1250 तक सतयुग। कितना क्लीयर है। एक कहानी है नाँ। सब= सत्य नारायण की कथा। अमरनाथ की कथा कहानी है नाँ। अब तुम बच्चो को सच्ची-2 कहानी सुनाते है। तुम अभी सच्ची सुनते हो। इसका ही फिर भक्ति मार्ग मै गायन चलता है। त्यौहार आद सब इसी समय केहै। नम्बरवन पर्व है शिव बाबा का। कलयुग के बाद जब बाप को आना पडे नई दुनियाँ बनाने वो चैंज करने। चित्रो को कोई अच्छी रीती बैठ कर देखे तो जाने कि कितना पूरा हिसाब बनाया हुआ है। तुमको यह निश्चय है कि कल्प पहले जितना पुरुषार्थ किया है उतना ही अब भी करेंगे जरूर। साक्षी होकर औरो को भी देखेंगे अपने पुरुषार्थ को जरूर जानते ही हो। तुम भी सब= जानते हो। स्टुडण्टस अपनी पढाई को नही जानते होंगे? दिल खावेगी जरूर कि मै इस विषय मे बहुत कच्चा हूं। नापास हो जाऊंगा। परिक्षा के समय जो नापास होते है उनका दिल धक-2 होता है। तुम बच्चे भी स10 करेंगे। नापास तो हो ही"फिर फिर क्या कर सकते है। स्कूल मे नापास होते है तो रिश्तेदार भी नाराज, टीचर भी= भी नाराज हो जाता है। हमारे स्कूल मे से कम पास हुये। वहाँ तो बहुत क्लासिज होते है नाँ2 यहाँ तो एक ही क्लास है। कोई टीचर की क्लास के कम पास हुये तो समझ जावेंगे कि यह टीचर इतना अच्छा नही है। इसलिये कम पास होंगे। बाबा भी जानते है सैन्टर्स पर कौन-2 अच्छे-2 टीचर्स है। कैसे पढाते है। कौन-2 अच्छी रीती पढा कर ले आते है वो समझना पड़ता है। बाबा तो कहते रहते है कि बादलो को ले आना है। बच्चो को भी साथ मे ले आवेंगे तो उनमे मोह रहेगा।

****

अकेले निकल कर आना चाहिये तो बुधी अच्छी तरह लगी रहेगी। बच्चो को तो वहाँ पर भी देखते ही रहते हो।

... कहते है कि ... होती है। नया मकान बनाते है तो ...

है नां कि नया मकान बन रहा है।तो धन्धा आद भी करते ही रहते है। परन्तु बुधी जो है वो नये मकान तरफ ही लगर रहती है। चुप कर तो बैठ नही जाते है नां।वो तो है हद की बात यह तो है बेहद की बात। अपने बच्चो आद की सम्भाल भी करनी है। परन्तु बुधी वहां ही लगी रहती है कि अब हम घर जाकर फिर नई राजधानी मे आवेंगे। यह याद रहेगा तो भी तुमको खुशी बहुत होगी। याद नां करने पर फिर पवित्र भी नही बन सकते है। कमाई नही कर सकेंगे। याद मे नही रहेंगे तो कमाई कैसे करेंगे। पावन कैसे बनेंगे? यहां तो है ही सब पतित। भ्रष्टाचारी।श्रेष्टाचारी कोई भी हो नही सके। भ्रष्टाचार से तो सब पैदा होते है बाकी कोई अच्छा आदमी कोई बुरा आदमी वो तो होता ही है। भलबहुत अच्छे है परन्तु है तो नर्कवासी ही नां। नर्कवासी है तो माना कि भ्रष्टाचारी है? यह सब बाप बैठ कर समझाते है। इस समय दो किनारे है? बाप को तो खिवैया भी कहते है परन्तु अर्थ नही समझते है। तुम जानते हो कि बाप उस किनारे ले जाते है। आत्मा जानती है कि हम अब बाप को याद कर बहुत नजदीक जा रहे है। खिवैया नाम भी तो अर्थ सहित ही है नां। यह है सब महिमा। कहते है नैय्या मेरी पार लगाओ। सतयुग मे भी ऐसे कहेंगे क्या? कलयुग मे ही पुकारते है। और एक को ही पुकारते है। 100×100 को थोडेई पुकारेंगे। तुम बच्चे ही समझते हो। यहां बेसमझ को तो आना ही नही है। बाप की सख्त मना है कि निश्चय नही है तो कब नही ले आना है। कुछ भी तो वो समझेंगे नही नां। पहले तो सात दिन का कोर्स दो। कोई-2 को तो दो रोज मे ही तीर लग जाता है। अच्छा लग गया तो फिर छोडेंगे थोडेई। कहेंगे हम तो सात रोज और भी सीखेंगे सार्टीफिकेट भेज देते है। तुम झट समझ जावेंगे कि यह इस कुल का है। तेज बुधी जो होंगे वो कोईकी भी बात की प्रवाह नही करेंगे। अच्छा एक नौकरी छूट जावेगी तो दूसरी मिलेगी। सच्चे दिल वाले जो होते है उनकी नौकरी भी छूटती नही है। खुद भी वन्डर खाते है। बच्चे कहते है कि हमारे पती की बुधी को फेरो। बाप कहते है कि मुझे मत कहो। तुम योग मे रहो फिर बैठ कर ज्ञान समझाओ। बाबा थोडेई बुधियों को फेरेंगे। फिर तो सभी ऐसे ही धन्धा करते रहेंगे। जो रसम निकलती है उसको ही पकड लेते है। कोई गुरू से किसीको फायदा हुआ सुना तो फिर तो उनके ही पीछे पडजावेंगे। नई आत्मा आती है तो उनकी महिमा तो निकलेगी नां। फिर तो बहुत फलोवर्स बन जाते है। इसलिये ही इन सब बातो को देखना नही है। तुम देखना है अपने को कि हम कहां तक पढते है। यह तो बाबा करके चिटचैट करते है। सिर्फ कह देवे कि तुम बाप ही याद करते रहो तो तुम थक जावेंगे। यह तो घर मे भी रह कर तुम याद कर सकते हो। ज्ञान का सागर है तो जरूर ज्ञान भी तो देंगे नां। यही है मुख्य बात की मनमनाभव। साथ-2 मे सृष्टी की आदमध्य अन्त का राज भी समझाते है। चित्र निकले है। उनका भी बाप समझाते है। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा को दिखाया है। त्रिमूर्ती भी है फिर विष्णु की नाभी से ब्रह्मा यह फिर क्या है। बाप बैठ समझाते है कि क्या राईट है क्या रांग है। कोई-2 शास्त्र मे तो चक्र यह दिखाया है परन्तु कोई मे को कितनी आयु लिख दी है कोई ने कितनी। अनेक मते है नां। रामायण भी बिलकुल झूठा है। एक सीता को ही थोडेई रावण ले गया। बाप बैठ समझाते है कि यह रावण का राज्य तो सारी दुनियां पर है। यह भी बेट है चारों तरफ पानी है। शास्त्रो मे तो हद की बाते लिखी हुई है। बाप तो बेहद की बाते समझाते है कि सारी दुनियां मे ही रावण का राज्य है। यह तुम्हारी बुधी मे ज्ञान है कि हम कैसे पतित बने फिर कैसे तो पावन बनना है। फिर पीछे-2 और धर्म आते है। अनेक वारायटी है। एक नही मिले दूसरे से। एक जैसे फीचर्स वाले दो हो नही सकते है। तो सिध होता है कि यह तो बना बनाया खेल है जो कि रिपीट होता है। बाप बच्चो को ही बैठ समझाते है। समय थोडा होता जाता है। अपनी ही जांच करो कि हम कहां तक खुशी मे रहते है। अच्छा कांटो से फूल बनने वालो को फूल बनाने वाले रूहानी बाप दादा का याद प्यार और गुड मार्निंग